IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयोंं में अध्ययनरत् बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

विजय कुमार प्रवक्ता, महेन्द्र कुमार सिंह, प्राचार्य

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बीसलपुर(पीलीभीत)

सार–तत्व :–

प्रस्तुत शोध पत्र में जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध के न्यादर्श का चुनाव उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा किया गया। न्यादर्श के रूप में जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 200 विद्यार्थियों, जिनमें 100 बालक व 100 बालिकाओं को चुना गया। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया, जिस हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित, ''शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण प्रश्नावली'' का निर्माण किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण करने हेतु माध्य, मानक विचलन का प्रयोग करते हुये ''टी'' मान प्राप्त किया गया। सांख्यिकी विश्लेषण तथा परिकल्पनाओं के आधार पर शोध विश्लेषण के बाद यह पता लगा कि जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

कूट शब्द :– परिषदीय विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय, अध्ययनरत्, शैक्षिक उपलब्धि स्तर।

प्रस्तावना :–

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी को उत्तम नागरिक बनाने के साथ–साथ जीवन के लिये तैयार करना भी है। इस दृष्टि से ज्ञान एवं अवबोध के साथ–साथ कौशल युक्त सम्पादन भी शिक्षा का अविभाज्य अंग है, वस्तुतः अर्जित ज्ञान का निजी जीवन में उपयोग ही वास्तविक ज्ञान है। व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का अतुलनीय योगदान होता है क्योंकि व्यक्ति जीवन में जो कुछ भी सीखता है, उससे स्वयं का जीवन तो संचालित करता ही है, साथ ही न्यूनाधिक रूप से समाज के अन्य सदस्यों के जीवन को भी प्रभावित करता है। व्यक्ति की शिक्षा का प्रभाव उसके परिवार, समाज में भी परिलक्षित होता है। भारतीय समाज में वैदिक काल से ही शिक्षा को लेकर एक अलग तरह का परिप्रेक्ष्य रहा है। भारतीय समाज में प्राचीन काल से शारीरिक शिक्षा के साथ सामाजिक विकासोन्मुख शिक्षा पर

जोर दिया जा रहा है। आज का युग वैज्ञानिक युग है। प्रत्येक व्यक्ति का दृष्टिकोण, चिन्तन, जिज्ञासा दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है। प्रत्येक व्यक्ति की शैक्षिक उपलब्धि भी भिन्न–भिन्न होती है। यह भिन्नता व्यक्ति के व्यवहारों से परिलक्षित होती है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अध्ययन अनिवार्य है, तो शैक्षिक क्षेत्र किस प्रकार से वंचित रह सकता है। उत्तम शैक्षिक उपलब्धि के लिये विद्यार्थियों को अपने ज्ञान को निरन्तर बढ़ाने के लिये सतत् अध्ययन आवश्यक है, साथ ही साथ अध्यापकों की अध्ययन आदतें उचित हों, वे पढ़ने–पढ़ाने के शौकीन हों और वे विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि स्तर को बढ़ाने में सहायक हों जिससे विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि स्तर को उचित स्वरूप प्रदान किया जा सके, ये ही सबसे अहम बात होगी।

आज वर्तमान में शिक्षा, शिक्षा पद्वति, शिक्षक व शिक्षार्थी में परिवर्तन आया है, इसलिए प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय में अलग–अलग शैक्षिक उपलब्धि स्तर का आना लाज़मी है। शिक्षा जीवन का सबसे महत्तवपूर्ण पहलू है, इससे न केवल हम सीखते हैं अपितु एक जिम्मेदार, समझदार और मेहनती नागरिक बनते हैं। शिक्षा के माध्यम से ही ज्ञान, कौशल, विवेक जागृत होता है, और परिस्थितियों के अनुरूप निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शिक्षा की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है, शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना ही नहीं होता है, अपितु शिक्षा के माध्यम से नयी चीजों को सीखने के साथ–साथ बच्चों के ज्ञान में या शैक्षिक उपलब्धि स्तर में वृद्धि की जा सकती है।

अध्ययन की आवश्यकता :–

सामाजिक विज्ञान मानव के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक गतिविधियों का अध्ययन है। यह मानव के अधिकारों और कर्तव्यों को इंगित करता है। मानव विकास के लिये सामाजिक विज्ञान का अध्ययन बहुत ही आवश्यक है, क्योंकि इस विषय के अध्ययन से उत्कृष्ठ समाज की रचना की जा सकती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस समाज में ही मुनष्य का जन्म, विकास एवं अभिवृद्धि होती है, अर्थात् मनुष्य का जन्म और उन्नति समाज में रहकर एवं समाज के सहयोग से होती है और समाज की उन्नति भी मुनष्य के सहयोग के बिना असम्भव है। सामाजिक विज्ञान ने समाज में एक विकास की क्रान्ति के रूप में अपनी पहचान बनायी है। सामाजिक विज्ञान ने अच्छी आदतों, आचरण, कौशलों का विकास अन्तः निर्भरता की भावना का विकास, समाजवादी दृष्टिकोण, सामाजिक जटिलताओं का विकास, वर्तमान को समझने का विकास और लोकता़ित्रंक दृष्टिकोण का विकास किया। सामाजिक विज्ञान हमें स्वयं को, दूसरों के साथ हमारे सम्बन्धों को समझाने में मदद करता है। हम जो अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, वह हर दिन लोगों के जीवन को बदल देती है, उदाहरण के लिये सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के संगठनों की एक विस्तृत श्रृंखला बहुत बड़ी समस्याओं का समाधान करने के लिए हमारी अंतर्दृष्टि का उपयोग कर रही है। सामाजिक विषय सेवा का एक रूप है। सामाजिक विज्ञान हमें स्वयं को, उपयोगकर्ताओं के साथ हमारी आपूर्ति को और दुनिया के साथ हमारी धारणा को समझने में मदद करता है। सामाजिक विज्ञान विषय के बिना हम एक ऐसी दुनिया की कल्पना– जहाँ इतिहास एक रहस्य, भूगोल एक अज्ञात क्षेत्र और राजनीति एक पहेली बनी हुयी है। सामाजिक विज्ञान शिक्षा खोज की, एक यात्रा है, जहाँ छात्र युगों और

महाद्वीपों के माध्यम से मानवीय अनुभव का पता लगाते हैं। वे समाज की जीत और विषय, हमारे जीवन को आकार देने वाली आर्थिक ताकतों और राजनीतिक सिद्धान्तों के जटिल जाल के बारे में सीखते हैं, जिससे मानव व्यवहार के संजाल और समाज की निरन्तरता विकसित होती है। सामाजिक विज्ञान के महत्व को कम करके नहीं देखा जा सकता है। यह विद्यार्थियों को विश्व संचार, सहानुभूति और समर्पित नागरिकों के रूप में ढालता है। देखा जाये तो 21वीं सदी में सामाजिक अध्ययन मुनष्य के अध्ययन का अभिन्न अंग है, क्योंकि सामाजिक अध्ययन विद्यार्थियों को वास्तविक दुनिया से जोड़ता है, आज की परस्पर जुड़ी दुनिया में विद्यार्थियों को सभी संस्कृतियों और समुदायों के लोगों के साथ बात–चीत करने के लिए तैयार रहना चाहिए और सामाजिक अध्ययन ही इसके लिए तैयार कर सकता है।

हमारे इतिहास में घटित घटनाओं व भूगोल में उल्लेखित तथ्य तथा एक अच्छे नागरिक बनाने में नागरिक शास्त्र की महत्ता सम्पूर्ण रूप में सामाजिक विषय के अन्तर्गत देखने को मिलती है, परन्तु यह देखा गया है कि सामाजिक विषय में विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि स्तर संतोषजनक नहीं है। अतः शोधकर्ता के द्वारा जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर के तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुयीं।

अध्ययन का शीर्षक :–

जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण : –

परिषदीय विद्यालयों :–

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित कक्षा–01 से कक्षा–08 तक के विद्यालय।

उच्च प्राथमिक विद्यालयों :–

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद के द्वारा संचालित कक्षा–06. से. कक्षा–08 तक के विद्यालय।

अध्ययनरत् विद्यार्थी :–

उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा–06, कक्षा–07 व कक्षा–08 के विद्यार्थी।

शैक्षिक उपलब्धि स्तर :–

शैक्षिक उपलब्धि स्तर से तात्पर्य अनुसंधानकर्ता द्वारा निर्मित उपलब्धि परीक्षण पर विद्यार्थियों द्वारा आये हुये प्राप्तांको से है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

इस अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया :–

1. जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों की कक्षा– 06 में अध्ययनरत् बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों की कक्षा– 07 में अध्ययनरत् बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों की अध्ययनरत् कक्षा– 08 में अध्ययनरत् बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं :–

इस अध्ययन कार्य के लिये शोधकर्ता ने निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया है।

- जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक व बालिकाओं में सामाजिक विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि स्तर के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 06 के बालक व बालिकाओं में सामाजिक विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि स्तर के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 07 के बालक व बालिकाओं में सामाजिक विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि स्तर के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 08 के बालक व बालिकाओं में सामाजिक विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि स्तर के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध की सीमाएं निम्नलिखित है :–

अध्ययन का क्षेत्र

1. यह शोध कार्य जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों तक ही सीमित है।
2. यह शोध कार्य जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक कक्षा–06 से कक्षा–08 तक के विद्यालयों के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में शामिल किया गया है।
3. यह शोध कार्य जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यलयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि स्तर के अध्ययन तक सीमित रखा गया है।

अनुसंधान विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता के द्वारा सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है, सर्वेक्षण विधि वर्तमान की प्रतिनिधि स्थिति, व्यवहार तथा शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु प्रस्तुत की जाने वाली विधि है।

शोधकार्य में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक विषय के प्रति बालक व बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है। वर्तमान तथ्यों को एकत्र करने के लिए सर्वेक्षण विधि से अध्ययन किया गया ।

जनसंख्या एवं न्यादर्श :–

प्रस्तुत अध्ययन में जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 100 बालक व 100 बालिकाओं का चयन कर प्रदत्तों का संकलन किया गया है।

शोध उपकरण :–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोधकर्ता के द्वारा स्वनिर्मित ''शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण प्रश्नावली'' का प्रयोग किया गया है, जिसमें शैक्षिक उपलब्धि स्तर अध्ययन हेतु सामाजिक विज्ञान के 40 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का संकलन किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां :–

1. माध्य
2. मानक विचलन
3. टी परीक्षण

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

इस शोध का उद्देश्य जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना था। शोधकर्ता ने पूर्व में निर्धारित किये उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के अनुसार परीक्षण में प्राप्त आंकड़ों का क्रमवार विश्लेषण किया जो इस प्रकार है :–

1. **जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर के प्राप्तांकों का सांख्यकी विश्लेषण –**

तालिका–1

क्र0 सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टीमान	परिणाम
1	परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक	100	14	0.83	0.12	असार्थक
2	परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिका	100	13.99			

व्याख्या :–

प्रदत्तों की गणना से प्राप्त परिणामों के आधार पर उपर्युक्त तालिका (01) से स्पष्ट है कि परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं के मध्यमान क्रमशः 14 तथा 13.99 हैं, इनका मानक विचलन 0.83 है तथा इनका ''टी'' मान 0.12 है जो स्वतन्त्रता के अंश 198 के लिये ''टी'' के .05 सार्थकता स्तर पर मान 1.97 तथा .01 स्तर पर मान 2.59 से कम है, इस तरह ''टी'' गणना का मान सार्थक अन्तर प्रदर्शित नहीं करता है।

अतः उक्त परिकल्पना क्रमांक 01 जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयोंमें अध्ययनरत् बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकृत की जाती है।

2. जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 06 के बालक व बालिकाओं में सामाजिक विज्ञान विषय की उपलब्धि स्तर के प्राप्तांकों का सांख्यकी विश्लेषण –

तालिका–2

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टीमान	परिणाम
1	परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा– 06 के बालक	40	14	1.18	0.80	असार्थक
2	परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा– 06 की बालिका	40	13			

व्याख्या :–

प्रदत्तों की गणना से प्राप्त परिणामों के आधार पर उपर्युक्त तालिका (02) से स्पष्ट है कि परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 06 के बालक व बालिकाओं के मध्यमान क्रमशः 14 तथा 13 हैं, इनका मानक विचलन 1.18 है तथा इनका ''टी'' मान 0.80 है जो स्वतन्त्रता के अंश 78 के मान 1.99 तथा 2.64 से कम है, इस तरह ''टी'' गणना का मान सार्थक अन्तर प्रदर्शित नहीं करता है।

अतः उक्त परिकल्पना क्रमांक 02 जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 06 के बालक व बालिकाओं में सामाजिक विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि स्तर के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकृत की जाती है।

3. जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 07 के बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति उपलब्धि स्तर के प्राप्तांकों का सांख्यकी विश्लेषण –

तालिका–3

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टीमान	परिणाम
1	परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा– 07 के बालक	30	13.33	1.51	0.44	असार्थक
2	परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा– 07 की बालिका	30	14			

व्याख्या :–

प्रदत्तों की गणना से प्राप्त परिणामों के आधार पर उपर्युक्त तालिका(03) से स्पष्ट है कि परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 07 के बालक व बालिकाओं के मध्यमान क्रमशः 13.33 तथा 14 हैं, इनका मानक विचलन 1.51 है तथा इनका ''टी'' मान 0.44 है जो स्वतन्त्रता के अंश 58 के लिये ''टी'' के लिये . 05 पर सार्थकता स्तर पर मान 2.00 तथा 0.01 स्तर पर मान 2.65 से कम है, इस तरह ''टी'' गणना का मान सार्थक अन्तर प्रदर्शित नहीं करता है।

अतः उक्त परिकल्पना क्रमांक 03 जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 07 के बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकृत की जाती है।

4. जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 08 के बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति उपलब्धि स्तर के प्राप्तांकों का सांख्यकी विश्लेषण –

तालिका–4

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टीमान	परिणाम
1	परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा– 08 के बालक	30	15	2.50	0.40	असार्थक
2	परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा– 08 की बालिका	30	16			

व्याख्या :–

प्रदत्तों की गणना से प्राप्त परिणामों के आधार पर उपर्युक्त तालिका(04) से है कि परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 08 के बालक व बालिकाओं के मध्यमान क्रमशः 15 तथा 16 हैं, इनका मानक विचलन 2.50 है तथा इनका ''टी'' मान 0.40 है जो स्वतन्त्रता के अंश 58 के लिये ''टी'' के .05 सार्थकता स्तर पर मान 2.00 तथा .01 स्तर पर मान 2.65 से कम है, इस तरह ''टी'' गणना का मान सार्थक अन्तर प्रदर्शित नहीं करता है।

अतः उक्त परिकल्पना क्रमांक 04 जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 08 के बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर के सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

संकलित आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण के द्वारा शोध परिकल्पनाओं की जाँच की गयी तथा विशलेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं जो इस प्रकार हैं :–

- जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर के सम्बन्ध मे कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
- जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 06 के बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर के सम्बन्ध मे कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
- जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 07 के बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर के सम्बन्ध मे कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
- जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा– 08 के बालक व बालिकाओं में सामाजिक विषय के प्रति शैक्षिक उपलब्धि स्तर के सम्बन्ध मे कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

भविष्यगत सुझाव :–

शैक्षिक उपलब्धि में सुधार हेतु भविष्य मे निम्नानुसार सुझावों का विवरण :–

- अध्यापकों को अतिरिक्त कार्यभार से मुक्त कर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है।
- अध्यापकों द्वारा कक्षा–कक्ष में प्रभावशाली शिक्षण उपयुक्त शिक्षण विधि तथा शिक्षण तकनीकी का प्रयोग करके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है।
- प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन बड़े न्यादर्श पर किया जा सकता है।
- उच्च प्राथमिक विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारको का अध्ययन किया जा सकता है।
- परिषदीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित अध्ययन उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में किया जा सकता है।
- समय–समय पर विद्यालयों में अध्यापकों तथा अभिभावकों के बीच बच्चों की समझ विकसित करने हेतु विभिन्न प्रकार के सेमिनार आयोजित कर, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है।
- विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की खेल–कूद प्रतियोगिताओं के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रतिभागी बनाकर तथा परिणाम स्वरूप पुरस्कार प्रदान करके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है।

आभार :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन को राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ, उत्तर प्रदेश की वित्तीय सहायता के माध्यम से श्री दरवेश कुमार, वरिष्ठ प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बीसलपुर–पीलीभीत के मार्गदर्शन में सम्पन्न किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

- आर्य पुष्पेश(2006), उत्तर प्रदेश में राजकीय स्पर्श विद्यालयों के जमा पाठ्यक्रम उपलब्धि स्तर का अध्ययन, एम0एड0 स्पेशल वी0आई0 लघुशोध(अनुप्रकाशित) जे0आर0एच0 यूनिवर्सिटी, चित्रकूट।
- त्रिपाठी विवेक नाथ, मिश्र दुर्गेश कुमार 2016 उ0प्र0 के चित्रकूट जनसिंह के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयोंके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन शिक्षक शिक्षा शोध पत्रिका vol. 10(03)2016 जे0आर0एच0 यूनिवर्सिटि, चित्रकूट।
- गुप्ता, एस0पी0(2004) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
- सुधांशु शर्मा(2014) उच्च माध्यमिक स्तर के बालकों के अभिभावकों के शैक्षिक स्तर का उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं रूचियों पर प्रभाव का अध्ययन, लार्डस विश्वविद्यालयों अलवर।
- कपिल, एच.के.(2015) अनुसंधान विधियां, एच.पी. भार्गव बुक हाउस आगरा।
- क्यूरी(2005) उच्च माध्यमिक विद्यालयोंमें अध्ययनरत् विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
- डा0 गिरीश कुमार वत्स VOL-06(2019) उच्च माध्यमिक विद्यालयोंके मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, प्राचार्य।
- ए0टी0एम0एस0 कॉलेज ऑफ एजूकेशन, अछेजा, हापुड़ उत्तर प्रदेश।
- पाण्डेय कल्पलता श्रीवास्तव(2016) एस0एस0शिक्षा मनोविज्ञान।
- शर्मा डा0बी0एल0सक्सेना डा0आर0एन0 यू0जी0सी0नेट शिक्षा शास्त्र आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
- आस्थाना विपिन व स्वेता मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन सेंट जोजफ कॉलेज आगरा।
- राज कृषि भर्तृहरि VOL-04(2022) , उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर बुद्धि की प्रभावशीलता का अध्ययन मतस्य विश्व विद्यालयों अलवर राजस्थान।
- शर्मा, बी0एन0(2004) शिक्षा, मनोविज्ञज्ञन साहित्य प्रकाशन आगरा।
- अग्रवाल, जे0सी0(2002), एजुकेशनल रिसर्च एल इन्ट्रोडक्शन आर्य बुक डिपो नई दिल्ली।
- पाण्डेय, के0पी0(1996) शैक्षिक अनुसंधान विश्वविद्यालयों प्रकाशन, वाराणसी।
- भटनागर ए0बी0शैक्षिक मनोविज्ञान इण्टरनेश्नल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ।
- बुच0एम0बी0(एडि0 1992), सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, न्यू दिल्ली, एन0सी0ई0आर0टी0।
- पाण्डेय लाख नरायण(2005), छात्रों एवं अभिभावकों का अशासकीय प्राथमिक विद्यालयोंके प्रति झुकाव एवं अध्ययन, प्राथमिक शिक्षक वर्ष 30 अंक 2, पृष्ठ 2429।